भूमिं करिय सेस-छ-पत्थडणेरइयाणमुस्सेधो आणेदव्वो । तस्स पमाणमेदं–

प्रस्तार	१	२	३	४	५	६	७
धनुष	३५	४०	४४	४९	५३	५८	६२
हस्त	२	०	२	०	२	०	२
अंगुल	२० ४/७	१७ १/७	१३ ५/७	१० २/७	६ ६/७	३ ३/७	०

[1]

पंचमपुढविपंचमपत्थडणेरइयाणमुस्सेधो पणुवीसुत्तरसदधणूणि[2] । एदं भूमिं करिय सेसचदुण्हं पत्थडाणमुस्सेधो आणेदव्वो । तेसिं पमाणमेदं–

प्रस्तार	१	२	३	४	५
धनुष	७५	८७	१००	११२	१२५
हस्त	०	२	०	२	०

[3]

विशेषार्थ– इस पृथिवीमें मुखका प्रमाण ३१ धनुष, १ हाथ और भूमिका प्रमाण ६२ धनुष, २ हाथ है । तथा, प्रतिपटल वृद्धिका प्रमाण ४ धनुष, १ हाथ और २० ४/७ अंगुल है ।

पांचवीं पृथिवीके पांचवें पाथडेमें नारकियोंका उत्सेध एकसौ पच्चीस धनुष है । इसे भूमिरूपसे स्थापित करके शेष चार पाथडोंके नारकियोंका उत्सेध ले आना चाहिये । उसका प्रमाण यह है– (देखो मूलका नकशा) ।

विशेषार्थ– पांचवीं पृथिवीमें मुखका प्रमाण ६२ धनुष, २ हाथ और भूमिका प्रमाण १२५ धनुष है । तथा प्रतिपटल वृद्धिका प्रमाण १२ धनुष और २ हाथ है ।

---

१ चउ दंडा इगि हत्थो पव्वाणि वीस सत्त पडिहत्ता । चउ भागा तुरिमाए पुढवीए हाणिवड्ढीओ ।। पणतीसं दंडाए हत्थाइं दोण्णि वीस पव्वाणिं । सत्तहिदा चउभागा उदओ आरट्ठिदाण जीवाणं ।। चालीसं कोदंडा वीसब्भहिअं सयं च पव्वाणिं । सत्तहिदं उच्छेहो तुरिमाए मारपडलजीवाणं । चउदालं चावाणि दो हत्था अंगुलाणि छण्णउदी । सत्तहिदो उच्छेहो तारिदयसंठिदाण जीवाणं ।। एक्कोणवण्ण दंडा बाहत्तरि अंगुला य सत्तहिदा । चच्चिदयम्मि तुरिमक्खोणीए णारयाण उच्छेहो ।। तेवण्णा चावाणिं दो हत्था अट्ठताल पव्वाणिं । सत्तहिदाणिं उदओ दमगिदयसंठियाण जीवाणं । अट्ठावण्णा दंडा सत्तहिदा अंगुला य चउवीसं । घादिदयम्मि तुरिमक्खोणीए णारयाण उच्छेहो ।। वासट्ठी कोदंडा हत्थाइं दोण्णि तुरिमपुढवीए । चरिमिंदयम्मि खलखलणामाए णारयाण उच्छेहो ।। ति. प. २, २५३–२६०

२ पंचमीए × पणवीसं धणुसयं । जीवाभि. ३, २, १२.

३ बारस सरासणाणिं दो हत्था पंचमीय पुढवीए । खयवड्ढीए पमाणं णिद्दिट्ठं वीयराएहिं ।। पणहत्तरिपरिमाणा कोदंडा पंचमीए पुढवीए । पढमिंदयम्मि उदओ तवणामे संठिदाण जीवाणं ।। सत्तासीदी दंडा दो हत्था पंचमीए खोणीए । पडलम्मि य ममणामे णारयजीवाण उच्छेहो ।। एक्कं कोदंडसयं झसणामे णारयाण उच्छेहो । चावाणि बारससुत्तरसयमेक्कं अंधयम्मि दो हत्था ।। एक्कं कोदंडसयं अब्भहियं पंचवीसरूवेहिं । भ्रमप्पहाए चरिमिंदयम्मि तिमिसयम्मि उच्छेहो ।। ति. प. २, २६१–२६५.

छट्ठीए पुढवीए तदियपत्थडणेरइयाणमुस्सेधो अड्ढाइज्जसदधणूणि[1]। एदं भूमिं करिय सेसदोण्हं पत्थडाणमुस्सेधो आणेदव्वो। तस्स पमाणमेदं–

प्रस्तार	१	२	३
धनुष	१६६	२०८	२५०
हस्त	२	१	०
अंगुल	१६	८	०

[2]

सत्तमाए पुढवीए णेरइयाणमुस्सेधो पंचसदधणूणि[3]। तेसिं पमाणमेदं–

प्रस्तार	१
धनुष	५००

[4]

एत्थ णेरइएसु उस्सेधअट्ठमभागो विक्खंभो त्ति कट्टु परिट्ठियमद्धं करिय विक्खंभद्धेण गुणियुस्सेहेण गुणिदे णेरइयाणमोगाहणा होदि। ओगाहणं पडि

छठवीं पृथिवीके तीसरे पाथडेमें नारकियोंका उत्सेध ढाईसौ धनुष है। इसे भूमिरूपसे स्थापित करके शेष दो पाथड़ोंके नारकियोंका उत्सेध ले आना चाहिये। उसका प्रमाण यह है– (देखो मूलका नकशा)।

विशेषार्थ– छठी पृथिवीमें मुखका प्रमाण १२५ धनुष और भूमिका प्रमाण २५० धनुष है। तथा प्रतिपटल वृद्धिका प्रमाण ४१ धनुष, २ हाथ और १६ अंगुल है।

सातवीं पृथिवीके नारकियोंका उत्सेध पांचसौ धनुष है। उसका प्रमाण यह है– (देखो मूलका नकशा)।

यहां नारकियोंमें उत्सेधके आठवें भागप्रमाण विष्कम्भ होता है, ऐसा समझकर, विष्कम्भकी परिधिको आधा करके और विष्कम्भके आधेसे गुणित करके उत्सेधसे गुणित करनेपर नारकियोंकी अवगाहना होती है। अवगाहनाकी अपेक्षा सातवीं पृथिवी प्रधान है,

---

१ छट्ठीए × अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं। जीवामि. ३, २, १२.

२ एक्कत्तालं दंडा हत्थाइं दोण्णि सोलसंगुलया। छट्ठीए वसुहाए परिमाणं हाणिवड्ढीए ॥ छासट्ठी अधियसयं कोदंडा दोण्णि होंति हत्था य। सोलस पव्वा य पुढं हिमपडलगदाण उच्छेहो ॥ दोण्णि सयाणि अट्ठाउत्त दंडाणि अंगुलाणं च। बत्तीसं छट्ठीए वंदलठिदजीवउच्छेहो ॥ पण्णासब्भहियाणि दोण्णि सयाणि सरासणाणि च। लल्लंकणामइंदयठिदाण जीवाण उच्छेहो ॥ ति. प. २, २६६–२६९.

३ सत्तमाए × पंचधणुसयाइं। जीवामि. ३, २, १२.

४ पंचसयाइं धणूणि सत्तमअवणीइ अवधिठाणम्मि। सव्वेसिं णिरयाणं काउच्छेहो जिणादेसो ॥ ति. प. २, २७०.

सत्तमपुढवी पधाणा, पढमपुढविओगाहणादो सत्तमपुढविओगाहणाए संखेज्ज-गुणत्तुवलंभादो। दव्वं पडि पढमपुढवी पहाणा, सेसपुढविदव्वादो पढमपुढविदव्वस्स असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। ओगाहणगुणगारादो दव्वगुणगारो बहुगो त्ति पढमपुढवी पहाणा कायव्वा।

सामण्णेण एत्थ अत्थपदं वुच्चदे। सत्थाणसत्थाणरासी मूलरासिस्स संखेज्जा भागा होदि। विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादरासीओ मूलरासिस्स संखेज्जदिभागो। एवमत्थपदं सव्वत्थ जोजेदव्वं। पुणो अप्पप्पणो रासिओ ठविय अंगुलस्स संखेज्जदिभागमेत्तोगाहणाए गुणिय चदुहि लोगेहि ओवट्टिदे चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागो आगच्छदि। माणुसखेत्तेणोवट्टिदे असंखेज्जाणि माणुसखेत्ताणि होंति। णवरि वेयण-कसायेसु णवगुणा[1], वेउव्वियसमुग्घादे संखेज्जगुणा ओगाहणा सव्वत्थ कायव्वा[2]। एवं मारणंतियपदस्स। णवरि ओवट्टणं ठविज्जमाणे पढमपुढविदव्वं पहाणं कायव्वं। कुदो? मारणंतिएण परिणदजीवस्स तत्थ विग्गहगईए

क्योंकि, पहली पृथिवीकी अवगाहनासे सातवीं पृथिवीकी अवगाहना संख्यातगुणी पाई जाती है। तथा, द्रव्यप्रमाणकी अपेक्षा पहली पृथिवी प्रधान है, क्योंकि, द्वितीयादि शेष छह पृथिवियोंके द्रव्यप्रमाणसे पहली पृथिवीका द्रव्य असंख्यातगुणा पाया जाता है। इस प्रकार सातवीं पृथिवीके अवगाहनाके गुणकारसे पहली पृथिवीके द्रव्यप्रमाणका गुणकार बहुत बड़ा है, इसलिये यहांपर पहली पृथिवीको प्रधान करना चाहिये।

अब सामान्यरूपसे यहांपर अर्थपदका निरूपण करते हैं— स्वस्थानस्वस्थानराशि मूल नारकराशिके संख्यात बहुभागप्रमाण है। विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त राशियां मूलराशिके संख्यातवें भागप्रमाण हैं। यह अर्थपद सर्वत्र जोड़ लेना चाहिये। पुनः अपनी अपनी राशियोंको स्थापित करके, उन्हें अंगुलके संख्यातवें भागप्रमाण अवगाहनासे गुणित करके जो लब्ध आवें उसे सामान्य आदि चार लोकोंसे पृथक् पृथक् भाजित करनेपर, अर्थात् सामान्य आदि चार लोकोंके, तत्प्रमाण खंड करनेपर, चार लोकोंका असंख्यातवां भाग लब्ध आता है। तथा उक्त प्रमाणको मानुषलोकसे अपवर्तित करनेपर अर्थात् उक्त प्रमाणके मानुषक्षेत्रप्रमाण खंड करनेपर असंख्यात मानुषक्षेत्र आते हैं। इतनी विशेषता है कि वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घातमें सर्वत्र अवगाहनाको नौगुणी और वैक्रियिकसमुद्घातमें अवगाहनाको सर्वत्र संख्यातगुणी कर लेना चाहिये। मारणान्तिकसमुद्घातका कथन इसी प्रकार जानना चाहिये। इतनी विशेषता है कि अपवर्तनाके

---

१ वेदणासमुग्घाएणं समोहते × × सरीरप्पमाणमेत्ते विक्खंभबाहल्लेणं नियमा छद्दिसिं × × प्रज्ञा. ३६, १७. एवं कसायसमुग्घातोवि भाणितव्वो। प्रज्ञा. ३६, १८.

२ वेउव्वियसमुग्घायाणं समोहते × × सरीरप्पमाणमेत्ते विक्खंभबाहल्लेणं, आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स संखेज्जतिभागं उक्कोसेणं संखिज्जानि जोयणानि एगदिसिं विदिसिं वा एवइए खित्ते × × प्रज्ञा. ३६, १९.

रज्जुअसंखेज्जदिभागमेत्तदीहत्तस्स वि उवलंभादो । तेण आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तपढमपुढविउवक्कमणकालेण ओवट्टिय लद्धस्स असंखेज्जा भागा विग्गहं करेंति। तेसिं पि असंखेज्जा भागा मारणंतियं करेंति त्ति । पुणो तमावलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तमारणंतियउवक्कमणकालेण गुणिदे मारणंतियरासी आगच्छदि । पुणो णेरइयमुहवित्थारेण णवगुणरज्जुअसंखेज्जदिभागेण मारणंतियरासिं गुणिदे तक्खेत्तं होदि । उववादस्सोवट्टणं ठविज्जमाणे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण विदियपुढविदव्वे भागे हिदे तिरिक्खेहिंतो विदियपुढवीए उप्पज्जमाणमिच्छाइट्ठिणो होंति । पुणो अवरेगं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं भागहारं ठविय रूवूणेण गुणिदे विग्गहगईए मारणंतिएण उप्पज्जमाणतिरिक्खमिच्छाइट्ठिणो होंति । पुणो अवरेगं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं भागहारं ठविदे तिरिक्खेहिंतो विग्गहगदीए रज्जुपडिभागेण मारणंतिय करिय उप्पज्जमाणतिरिक्खमिच्छाइट्ठिणो होंति त्ति वत्तव्वं । सव्वत्थ रज्जुमेत्तायामविदियदंडुवलंभादो । पुणो एदं दव्वं तिरिक्खोगाहणमुहवित्थारेण णवरज्जुगुणिदेण गुणेदव्वं । ओवट्टणा पुव्वं व कादव्वा । एवं सासणस्स । णवरि उववादो णत्थि ।

स्थापित करनेपर पहली पृथिवीके द्रव्यको प्रधान करना चाहिये, क्योंकि, मारणान्तिक समुद्धातसे परिणत हुए जीवके यहां विग्रहगतिमें राजुके असंख्यातवें भागप्रमाण दीर्घता भी पाई जाती है । इसलिये आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण पहली पृथिवीके उपक्रमणकालसे प्रतिसमयमें मरनेवाली राशिको भाजित करके जो लब्ध आवें उसके असंख्यात बहुभागप्रमाण जीव विग्रहको करते हैं । तथा इनके भी असंख्यात बहुभागप्रमाण जीव प्रति समयमें मारणान्तिकसमुद्धातको करते हैं । पुनः इसे आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण मारणान्तिकसमुद्घातके उपक्रमणकालसे गुणित करनेपर मारणान्तिक समुद्धातराशि होती है । पुनः नारकियोंके मुखविस्तारसे नौ गुणे राजुके असंख्यातवें भागसे मारणान्तिकराशिको गुणित करनेपर मारणान्तिकसमुद्धातक्षेत्र होता है । यह युक्तिसे कहा है । वास्तवमें तो उपपादकी अपवर्तनाके स्थापित करनेपर पल्योपमके असंख्यातवें भागसे दूसरी पृथिवीसंबन्धी द्रव्यके भाजित करनेपर तिर्यंचोंमेंसे दूसरी पृथिवीमें उत्पन्न होनेवाले मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । पुनः पल्योपमके असंख्यातवें भागरूप एक दूसरा भागहार स्थापित करके एक कमसे गुणित करनेपर विग्रहगतिमें मारणान्तिकसमुद्धातसे उत्पन्न होनेवाले तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं । पुनः एक दूसरे पल्योपमके असंख्यातवें भागको भागहाररूपसे स्थापित करनेपर तिर्यंचोंमेंसे विग्रहगतिमें राजुके प्रतिभागरूपसे मारणान्तिक समुद्धात करके उत्पन्न होनेवाले तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव होते हैं, ऐसा कथन करना चाहिये, क्योंकि, सर्वत्र राजुमात्र आयामसे युक्त दूसरा दंड पाया जाता है । पुनः इस द्रव्यको नौ गुणी राजुसे गुणित तिर्यंचोंकी अवगाहनाके मुखविस्तारसे करना चाहिये । यहांपर अपवर्तना पहलेके समान करनी चाहिये ।

मारणंतियरासिमिच्छिय दो आवलियाए असंखेज्जदिभागे अण्णोण्णगुणे करिय पुव्वरासिस्स भागहारं ठविय तप्पाओग्गेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिदे मारणंतियरासी होदि। सेसविधी पुव्वं व। एवं सम्मामिच्छाइट्ठिस्स। णवरि मारणंतियं पि णत्थि। असंजदसम्माइट्ठिस्स सासणभंगो। णवरि उववादो अत्थि। मारणंतिय-उववादेसु णेरइया सम्माइट्ठिणो संखेज्जा चेव होंति। सेसं जाणिय वत्तव्वं।

एवं सत्तसु पुढवीसु णेरइया ॥ ६ ॥

दव्वट्ठियणयमवलंबिय सुत्तं जदो ट्ठिदं[1] तदो सत्तण्हं पुढवीणं परूवणा णिरओघपरूवणाए तुल्लेत्ति घडदे। पज्जवट्ठियणए पुण अवलंबिज्जमाणे पढमपुढविपरूवणा णिरओघपरूवणाए तुल्ला, सव्वगुणाणं सव्वपदेहि सरिसत्तुवलंभादो। ण विदियादिपंचपुढवीणं परूवणा ओघपरूवणाए पदं पडि तुल्ला, तत्थ असंजद-

---

इसी प्रकार सासादनसम्यग्दृष्टि नारकियोंके भी स्वस्थानस्वथान आदि समझना चाहिये। इतनी विशेषता है कि उनके उपपाद नहीं पाया जाता है। जब मारणान्तिक समुद्घातको प्राप्त राशिके लानेकी इच्छा हो तब दो वार आवलीके असंख्यातवें भागको परस्पर गुणित करके और उसे पूर्वराशिका भागहार स्थापित करके उसके योग्य आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर मारणान्तिक समुद्घातको प्राप्त राशि होती है। शेष विधि पहलेके समान है। इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि नारकियोंके भी स्वस्थानस्वस्थान आदि जानना चाहिये। इतनी विशेषता है कि इनके मारणान्तिकसमुद्घात भी नहीं होता है। असंयतसम्यग्दृष्टि नारकियोंके स्वस्थानस्वस्थान आदि सासादनसम्यग्दृष्टि नारकियोंके स्वस्थानस्वस्थान आदिके समान है। इतनी विशेषता है कि इनके उपपाद पाया जाता है। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादमें सम्यग्दृष्टि नारकी संख्यात ही पाये जाते हैं। शेष कथन जानकर करना चाहिये।

इसी प्रकार सातों पृथिवियोंमें नारकी जीव लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ ६ ॥

चूंकि यह सूत्र द्रव्यार्थिक नयका अवलंबन लेकर स्थित है, इसलिये सातों पृथिवियोंकी प्ररूपणा नारकियोंकी ओघप्ररूपणा तुल्य है, यह कथन घटित हो जाता है। पर्यायार्थिक नयका अवलम्बन करनेपर तो पहली पृथिवीकी प्ररूपणा नारकियोंकी ओघप्ररूपणाके तुल्य है, क्योंकि, पहली पृथिवीमें सामान्यप्ररूपणासे सर्व गुणस्थानोंकी सर्व पदोंकी अपेक्षा समानता पाई जाती है। किंतु स्वस्थानस्वस्थान आदि पदोंकी अपेक्षा द्वितीयादि पांच पृथिवियोंकी प्ररूपणा

---

१ प्रतिषु 'जदो ट्ठिदं तदो ट्ठिदं' इति पाठः।

लब्भदि त्ति तग्गहणं जुत्तं, तहा तत्थुप्पज्जमाणाणं सुट्ठु त्थोवत्तादो। एदं कुदो णव्वदे? तिरियलोगस्सासंखेज्जदिभागे त्ति वक्खाणादो। मारणंतियसमुग्घादगदमिच्छाइट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे, अड्ढाइज्जादो वि असंखेज्जगुणे। सेसमोघं। णवरि असंजदसम्माइट्ठीणं उववादो णत्थि। वाणवेंतर-जोइसियाणं देवोघभंगो। णवरि असंजदसम्माइट्ठीणं उववादो णत्थि।

पणुवीसं असुराणं सेसकुमाराण दस धणू चेय।
वेंतर-जोदिसियाणं दस सत्त धणू मुणेयव्वा[1] ॥ १८ ॥

एदम्हादो उस्सेहादो एत्थ ओगाहणखेत्तमाणेदव्वं। सोधम्मीसाणे सत्थाण-सत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदमिच्छादिट्ठी चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे। एत्थ सगलखेत्तपरिक्खा भवणवासियभंगो। अप्पणो ओहिखेत्तमेत्तं देवा विउव्वंति त्ति जं आइरियवयणं[2]

शंका— यह किस प्रमाणसे जाना जाता है ?

समाधान— उपपादपरिणत भवनवासी देव तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं, इस प्रकार व्याख्यानसे उक्त कथन जाना जाता है।

मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुए मिथ्यादृष्टि भवनवासी देव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें, तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसे भी असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। शेष कथन ओघप्ररूपणाके समान है। इतनी विशेषता है कि असंयतसम्यग्दृष्टियोंका भवनवासियोंमें उपपाद नहीं होता है। वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंका क्षेत्र देवसामान्यके क्षेत्रके समान है। इतनी विशेषता है कि असंयत-सम्यग्दृष्टियोंका वानव्यन्तर और ज्योतिषियोंमें उपपाद नहीं होता है।

भवनवासियोंके दश भेदोंमेंसे प्रथम भेद असुरकुमारोंके शरीरकी उंचाई पच्चीस धनुष और शेष नौ कुमारोंके शरीरकी ऊंचाई दश धनुष है। तथा व्यन्तर देवोंके शरीरकी ऊंचाई दश धनुष और ज्योतिषी देवोंके शरीरकी ऊंचाई सात धनुष जानना चाहिये ॥ १८ ॥

इस पूर्वोक्त उत्सेधसे यहां अवगाहनाक्षेत्र ले आना चाहिये। सौधर्म और ईशान कल्पमें स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त हुए मिथ्यादृष्टि देव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। यहांपर सर्व पदगत क्षेत्रोंकी परीक्षा भवनवासियोंके क्षेत्रके समान करना चाहिये। देव अपने अपने अवधिज्ञानके क्षेत्रप्रमाण विक्रिया करते हैं, इस प्रकार जो अन्य आचार्योंका वचन है वह घटित नहीं होता है, क्योंकि, ऐसा माननेपर लोकके

---

१ त्रि. सा. २४९. तत्र चतुर्थचरणे 'दस सत्त सरीरउदओ दु' इति पाठः।

२ सेसा वेंतरदेवा णिय-णिय-ओहीणजेत्तियं खेत्तं। पूरंति तेत्तियं पि हु पत्तेक्कं विकरणबलेण। ति. प. ५,९६.

एदस्स सुत्तस्स परूवणा ओघमिच्छादिट्ठिपरूवणाए तुल्ला। णवरि वेउव्वियसमुग्घादगदजीवा तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागे, तिरिक्खेसु विउव्वमाणरासी पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्त[1]घणंगुलेहि गुणिदसेढिमेत्तो त्ति गुरूवदेसादो।

सासणसम्माइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा त्ति केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ८ ॥

एदेण देसामासियसुत्तेण सूचिद-अत्थो वुच्चदे– सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्विएहि परिणदसासणसम्मादिट्ठी केवडि खेत्ते ? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। रासिपमाणं भण्णमाणे सत्थाणसत्थाणरासी मूलरासिस्स संखेज्जा भागा। सेसरासीओ मूलरासिस्स संखेज्जदिभागमेत्तीओ। णवरि वेउव्वियसमुग्घादरासी मूलरासिस्स असंखेज्जदिभागो। कुदो ? तिरिक्खेसु विउव्वमाणजीवाणं पउरं संभवाभावादो। एत्थ ओगाहणगुणगारो संखेज्जघणंगुलमेत्तो, एगघणंगुलं वा[2]।

इस सूत्रकी प्ररूपणा ओघमिथ्यादृष्टि प्ररूपणाके समान है। इतनी विशेषता है कि वैक्रियिकसमुद्धातको प्राप्त तिर्यंच जीव तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, तिर्यंचोंमें विक्रिया करनेवाली राशि पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र घनांगुलोंसे गुणित जगत्श्रेणीप्रमाण है, ऐसा गुरुका उपदेश है।

सासादनसम्यग्दृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थानतकके तिर्यंच जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ ८ ॥

अब इस देशामर्शक सूत्रसे सूचित अर्थको कहते हैं– स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्धात, कषायसमुद्धात और वैक्रियिकसमुद्धातरूपसे परिणत सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंच जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और अढाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। स्वस्थानस्वस्थान आदि उक्त राशियोंके प्रमाणका कथन करनेपर स्वस्थानस्वस्थान जीवराशि मूलराशिके संख्यात बहुभागप्रमाण है। तथा शेष राशियां मूलराशिके संख्यातवें भाग मात्र हैं। इतनी विशेषता है कि वैक्रियिक समुद्धातको प्राप्त राशि मूलराशिके असंख्यातवें भागप्रमाण है, क्योंकि, तिर्यंचोंमें विक्रिया करनेवाले जीव प्रचुर संभव नहीं है। यहां पर अवगाहनाका गुणकार संख्यात घनांगुलप्रमाण अथवा एक घनांगुल है।

१ बादरपुण्णा तेऊ सगरासीए असंखभागमिदा। विक्किरियसत्तिजुत्ता पल्लासंखेज्जया वाऊ ॥ पल्लासंखेज्जाहयविंदंगुलगुणिदसेढिमेत्ता हु। वेगुव्वियपंचक्खा भोगभुमा पुह विगुव्वंति गो. जी. २५८–२५९.

२ गो. जी. ९६.

एवं सम्मामिच्छाइट्ठि-असंजदसम्माइट्ठि-संजदासंजदाणं । मारणंतियसमुग्घादगदसासणसम्मादिट्ठि केवडि खेत्ते? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । ओघरासिमावलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे मरंतसासणसम्माइट्ठिरासी होदि । पुणो वि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण हरिय रूवूणेण गुणिदे मारणंतियसमुग्घादगदरासी होदि। पुणो वि आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे रज्जुमेत्तायामेण मारणंतियसमुग्घादगद-एगसमयसंचिदरासी होदि । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण गुणिदे तक्कालसंचिदरासी होदि । एवं संखेज्जपदरंगुलगुणिदरज्जूए गुणिदे मारणंतियखेत्तं होदि। एवमसंजद-संजदासंजदाणं। सम्मामिच्छाइट्ठीणं मारणंतियं णत्थि ।

उववादगदसासणसम्माइट्ठी केवडि खेत्ते, चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । एत्थ रासिपमाणमाणिज्जमाणे मूलरासिमावलियाए असंखेज्जदिभाएण भागे हिदे उप्पज्जमाणसासणसम्माइट्ठिरासी होदि । पुणो अवरेण

इसी प्रकार सम्यग्मिथ्यादृष्टि, असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत तिर्यंचोंके भी स्वस्थानस्वस्थान आदिके विषयमें समझना चाहिये । मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुए सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंच कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। ओघराशिको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर मरनेवाली सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंचराशि होती है। फिर भी आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करके एक कम उससे गुणित करने पर मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त राशि होती है। फिर भी आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर रज्जु मात्र आयामकी अपेक्षा मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त एक समयमें संचित जीवराशि होती है। इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करने पर मारणान्तिक समुद्घातके कालमें संचित हुई राशि होती है। इसे संख्यात प्रतरांगुलोंसे गुणित राजुसे गुणा करने पर मारणान्तिक क्षेत्र होता है। इसी प्रकार असंयतसम्यग्दृष्टि और संयतासंयत तिर्यंचोंके मारणान्तिकसमुद्घातके विषयमें कहना चाहिये। सम्यग्मिथ्यादृष्टियोंके मारणान्तिकसमुद्घात नहीं होता है।

उपपादको प्राप्त सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंच कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। यहां पर सासादनसम्यग्दृष्टि तिर्यंचोंकी उपपादराशिका प्रमाण लाने पर मूलराशिको आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करने पर उत्पन्न होनेवाली सासादनसम्यग्दृष्टि राशि

आवलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे रूवूणेण गुणिदे विग्गहगईए मारणंतिएण उप्पज्जमाणरासी होदि । संखेज्जा भागा मारणंतियं कादूणुप्पज्जंति त्ति के वि भणंति, एदं जाणिय वत्तव्वं । णत्थि एत्थ मज्झणियमो । तमावलियाए असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे उज्जुदो आगच्छमाणरासी होदि । एदस्स पदरंगुलस्स संखेज्जदिभाएण गुणिदरज्जुं गुणगारं ठविदे उववादखेत्तं होदि । एत्थ ओवट्टणा पुव्वं व । एवमसंजदसम्मादिट्ठिस्स । णवरि उववादे जीवा संखेज्जा होंति, पुव्वं बद्धायुग-मणुस्ससम्माविट्ठीहि विणा अण्णेसिं तत्थ उववादाभावादो । ओगाहणगुणगारो वि संखेज्जपदरंगुलमेत्तो, एगपदरंगुलमेत्तो वा । सम्मामिच्छाइट्ठि-संजदासंजदाणं उववादं णत्थि ।

पंचिंदियतिरिक्ख-पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-पंचिंदियतिरिक्खजोणिणीसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव संजदासंजदा केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ ९ ॥

होती है । पुनः एक दूसरे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करनेपर और एक कम उक्त भागहारसे गुणित करनेपर विग्रहगतिमें मारणान्तिकसमुद्घातसे उत्पन्न होनेवाली जीवराशि है । उत्पन्न होनेवाली राशिके संख्यात बहुभाग प्रमाण जीव मारणान्तिकसमुद्घात करके उत्पन्न होते हैं, ऐसा कितने ही आचार्य कहते हैं, इसलिये इसको जानकर कथन करना चाहिये । किन्तु इस विषयमें कोई मध्यम नियम नहीं है । इसे आवलीके असंख्यातवें भागसे भाजित करनेपर ऋजुगतिसे आनेवाली राशिका प्रमाण होता है । प्रतरांगुलके संख्यातवें भागसे राजुको गुणित करके जो लब्ध आवे उसे इस राशिका गुणकार स्थापित करने पर उपपादक्षेत्र होता है । यहां पर अपवर्तना पहलेके समान जाननी चाहिये । इसी प्रकार असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यंचोंका उपपाद जानना चाहिये । इतनी विशेषता है कि उपपादमें असंयतसम्यग्दृष्टि तिर्यंच संख्यात ही होते हैं, क्योंकि, जिन मनुष्योंने सम्यग्दर्शनके पहले तिर्यंचायुका बन्ध कर लिया है ऐसे मनुष्य सम्यग्दृष्टियोंके विना दूसरे सम्यग्दृष्टियोंका तिर्यंचोंमें उपपाद नहीं होता है । इनकी अवगाहनाका गुणकार भी संख्यात प्रतरांगुलप्रमाण अथवा एक प्रतरांगुल मात्र है । सम्यग्मिथ्यादृष्टि और संयतासंयत तिर्यंचोंके उपपाद नहीं होता है ।

पंचेन्द्रियतिर्यंच, पंचेन्द्रियतिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रियतिर्यंच योनिनी जीवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर संयतासंयत गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानके तिर्यंच कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ ९ ॥

एदं पि देसामासियं सुत्तमेव, संगहिदाणेगसुत्तत्थादो। तं जहा– सत्थाणसत्थाण - विहारवदिसत्थाण - वेदण - कसायसमुग्घादगदपंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते? तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोगस्स संखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। एत्थ पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्तरासिं मोत्तूण पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्तरासी चेव घेत्तव्वो, अपज्जत्तोगाहणादो पज्जत्तोगाहणाए असंखेज्जगुणत्तुवलंभादो। एत्थ सत्थाणसत्थाणरासी मूलरासिस्स संखेज्जभागमेत्ता होदि। सेसरासीओ तस्स संखेज्जदिभागमेत्तीओ। एत्थ ओगाहणगुणगारो संखेज्जघणंगुलमेत्तो। ओवट्टणं जाणिदूण कादव्वं। एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-जोणिणीमिच्छादिट्ठीणं। वेउव्वियसमुग्घादगदमिच्छादिट्ठी केवडि खेत्ते? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। एवं पंचिंदियतिरिक्ख-पज्जत्त-जोणिणीमिच्छाइट्ठीणं। मारणंतियसमुग्घादगदपंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते? तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। कुदो? पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-रासिस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागमेत्तभागहारस्स सत्तादो। तं कधं?

यह भी सूत्र देशामर्शक ही है, क्योंकि, इसमें अनेक सूत्रोंका अर्थ संग्रहीत है उसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है– स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्धात और कषायसमुद्धातको प्राप्त पंचेन्द्रियतिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सामान्यलोक, ऊर्ध्वलोक और अधोलोक, इन तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें, तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। यहांपर पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीवराशिको छोड़कर पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त राशिका ही ग्रहण करना चाहिये, क्योंकि, अपर्याप्तोंकी अवगाहनासे पर्याप्तोंकी अवगाहना असंख्यातगुणी पाई जाती है। यहां पर स्वस्थानस्वस्थान राशि मूलराशिके संख्यात बहुभागप्रमाण होती है। शेष राशियां मूलराशिके संख्यातवें भागमात्र होती हैं। यहांपर अवगाहनाका गुणकार संख्यात घनांगुलप्रमाण है। अपवर्तनाका कथन जानकर करना चाहिये। इसी प्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त तथा पंचेन्द्रियतिर्यंच योनिनी मिथ्यादृष्टियोंकी स्वस्थानस्वस्थानराशि आदि समझना चाहिये। वैक्रियिकसमुद्धातको प्राप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। इसी प्रकार पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त तथा पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनी मिथ्यादृष्टियोंका वैक्रियिकसमुद्धातगत क्षेत्र जानना चाहिये। मारणान्तिकसमुद्धातको प्राप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त मिथ्यादृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सामान्यलोक, ऊर्ध्वलोक और अधोलोक इन तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्तराशिका भागहार पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र पाया जाता है।

संखेज्जवस्साउअतिरिक्खोवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण तेरासियकमेण भागे हिदे मरंतपंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठिपमाणं होदि । एत्थ उवक्कमणकालागमणविधी वुच्चदे– संखेज्जावलियासु जदि आवलियाए असंखेज्जदिभागो णिरंतरुवक्कमणकालो लब्भदि, तो उवक्कमणाणुवक्कमणप्पयम्मि आयुट्ठिदिम्हि केत्तियमुवक्कमणकालं लभामो त्ति पमाणेण फलगुणिदमिच्छमोवट्टिदे आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्तुवक्कमणकालो लब्भदि । एवं संखेज्जवस्साउअरासीणं सांतराणमुवक्कमणकालो अण्णेसिं पि आणेदव्वो[1] । पुणो मारणंतियरासिमिच्छिय अवरं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागं भागहारं ठविय रूवूणेण गुणिय रज्जुआयामेण ट्ठिदरासिमिच्छिय अण्णेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागहारो ठवेयव्वो । पुणो एत्थतणसंचयमिच्छिय मारणंतियउवक्कमणकालेण आवलियाए असंखेज्जदिभाएण गुणिय पुणो एदं रज्जुगुणिदसंखेज्जपदरंगुलेहि गुणिदे मारणंतियक्खेत्तं होदि । एदेण

शंका– यह कैसे ?

समाधान– संख्यात वर्षकी आयुवाले तिर्यंचोंके उपक्रमणकालरूप आवलीके असंख्यातवें भागसे त्रैराशिक क्रमसे भाजित करने पर प्रत्येक समयमें मरनेवाले पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टियोंका प्रमाण होता है ।

अब यहां पर उपक्रमणकालके लानेकी विधिको कहते हैं– संख्यात आवलियोंके भीतर यदि आवलीका असंख्यातवां भागप्रमाण निरन्तर उपक्रमणकाल प्राप्त होता है, तो उपक्रमण और अनुपक्रमणरूप आयुकी स्थितिके भीतर कितने उपक्रमणकाल प्राप्त होंगे, इस प्रकार आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण फलराशिसे उपक्रमण और अनुपक्रमणात्मक आयुकी स्थितिरूप इच्छाराशिको गुणित करके और संख्यात आवलीप्रमाण प्रमाणराशिका भाग देने पर आवलीके असंख्यातवें भागमात्र उपक्रमणकाल प्राप्त होता है । इसी प्रकार संख्यात वर्षकी आयुवाली अन्य सान्तर राशियोंका भी उपक्रमणकाल ले आना चाहिये । पुनः यहां मारणान्तिक राशिका प्रमाण लाना है, इसलिये एक दूसरा पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण भागहार स्थापित करके और एक कम उसीसे गुणित करके राजुप्रमाण आयामकी अपेक्षा स्थित राशि लाना इच्छित है, इसलिये एक दूसरे पल्योपमके असंख्यातवें भागरूपसे भागहार स्थापित करना चाहिये । पुनः यहांपर मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त जीवराशिका संचय इच्छित है, इसलिये मारणान्तिकसंबन्धी उपक्रमणकाल आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणित करके पुनः क्षेत्र लानेके लिये इस राशिको राजुसे गुणित संख्यात प्रतरांगुलोंसे गुणित करने पर मारणान्तिक क्षेत्रका प्रमाण होता है । इस क्षेत्रके प्रमाणसे सामान्यलोक आदि

---

१ सोवक्कमाणुवक्कमकालो संखेज्जवासट्ठिदिवाणे । आवलिअसंखभागो संखेज्जावलिपमा कमसो ।। गो. जी. २६५.

तिण्णि वि लोगे भागे हिदे पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो आगच्छदि त्ति तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे अच्छंति त्ति सिद्धं । तिरिय-णरलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-जोणिणीणं वत्तव्वं । उववादगदपंचिंदियतिरिक्खमिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते ? तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे । एत्थ उववादखेत्तमाणिज्जमाणे मारणंतियभंगो । णवरि पढमदंडमुवसंहरिय विदियदंडट्ठियजीवे इच्छिय अण्णेगो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो, असंखेज्जजोयणविदियदंडायाम-जीवाणं बहूणमणुवलंभादो । एसो एगसमयसंचिदो त्ति आवलियाए असंखेज्जदि-भाएण गुणगारे अवणिदे रज्जुगुणिदसंखेज्जपदरंगुलाणि गुणगारो होदि । एवं पंचिंदियतिरिक्खपज्जत्त-जोणिणीणं वत्तव्वं । सेसगुणट्ठाणाणं तिरिक्खोघभंगो । णवरि जोणिणीसु असंजदसम्माइट्ठीणं उववादो णत्थि ।

तीनों ही लोकोंके भाजित करने पर पल्योपमका असंख्यातवां भाग आता है, इसलिये सामान्य लोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें मारणान्तिकसमुद्घातगत पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त जीव रहते हैं, यह बात सिद्ध हुई । तथा मारणान्तिकसमुद्घातगत पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त जीव तिर्यग्लोक और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । इसी प्रकार मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनियोंका कथन करना चाहिये ।

उपपादको प्राप्त हुए पंचेन्द्रिय तिर्यंच मिथ्यादृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं । यहां पर उपपादक्षेत्रके लाते समय मारणान्तिक क्षेत्रके समान कथन करना चाहिये । इतनी विशेषता है कि प्रथम दंडका उपसंहार करके दूसरे दंडमें स्थित जीवोंका प्रमाण लाना इच्छित है, इसलिये पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण एक दूसरा भागहार स्थापित करना चाहिये, क्योंकि, असंख्यात योजन आयामवाले दूसरे दंडमें स्थित जीव बहुत नहीं पाये जाते हैं । यह एक समयमें संचित जीवराशि हुई, इसलिये आवलीके असंख्यातवें भागसे गुणकारके अपनीत करने पर राजुसे गुणित संख्यात प्रतरांगुल गुणकार होता है । इसी प्रकार उपपादको प्राप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच पर्याप्त और पंचेन्द्रिय तिर्यंच योनिनियोंका कथन करना चाहिये । उपपादकी अपेक्षा शेष गुणस्थानोंका कथन तिर्यंच ओघके कथनके समान जानना चाहिये । इतनी विशेषता है कि योनिनी तिर्यंचोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका उपपाद नहीं होता है ।

विशेषार्थ— यहांपर जो प्रथम दंड आदिका कथन किया गया है, उसका अभिप्राय यह है कि विग्रहगतिमें मरणक्षेत्रसे लगाकर प्रथम मोड़े तक जीवका जो सीधा गमन होता है वह प्रथम दंड है । तथा प्रथम मोड़ेसे लगाकर द्वितीय मोड़े तक जीवका जो सीधा गमन होता है वह द्वितीय दंड है । इसी प्रकारसे तीसरा दंड भी समझना चाहिए ।

पंचिंदियतिरिक्खअपज्जत्ता केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदि-भागे ॥ १० ॥

एदस्स देसामासियसुत्तस्स अत्थो वुच्चदे– सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादगदा केवडि खेत्ते? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। कुदो? उस्सेधघणंगुलं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण खंडिदमेत्तोगाहणत्तादो। अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। विहारवदिसत्थाणं वेउव्वियसमुग्घादो य णत्थि। मारणंतिय-उववादगदा केवडि खेत्ते? तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे। कुदो? रासिस्स भागहारभूदा होदूण जहाकमेण दोण्णि तिण्णि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागा लब्भंति त्ति। तिरिय-माणुसलोगादो असंखेज्जगुणे अच्छंति। सुगममेदं।

मणुसगदीए मणुस-मणुसपज्जत्त-मणुसिणीसु मिच्छाइट्ठिप्पहुडि जाव अजोगिकेवली केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे[1] ॥११॥

पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ।। १० ।।

अब इस देशामर्शक सूत्रका अर्थ कहते हैं– स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घातको प्राप्त हुए पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, उत्सेध घनांगुलको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे खंडित करके जो एक भाग लब्ध आवे तत्प्रमाण पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीवकी अवगाहना है। तथा पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीवोंके विहारवत्स्वस्थान और वैक्रियिकसमुद्घात नहीं पाया जाता है। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादको प्राप्त हुए पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सामान्य लोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, राशिके भागहाररूप होकर यथाक्रमसे अर्थात् मारणान्तिकसमुद्घातकी अपेक्षा दो वार पल्योपमके असंख्यातवें भाग और उपपादकी अपेक्षा तीन वार पल्योपमका असंख्यातवां भाग पाया जाता है। तथा तिर्यग्लोक और मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादके प्राप्त पंचेन्द्रिय तिर्यंच अपर्याप्त जीव रहते हैं। इस प्रकार इसका व्याख्यान सुगम है।

मनुष्यगतिमें मनुष्य, मनुष्यपर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानमें जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ।। ११ ।।

1 मनुष्यगतौ मनुष्याणां मिथ्यादृष्टयाद्ययोगकेवल्यन्तानां लोकस्यासंख्येयभागः। स. सि. १, ८.

एदस्स सुत्तस्स अत्थो वुच्चदे– सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदमिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। कुदो ? मणुसपज्जत्तमिच्छाइट्ठिखेत्तग्गहणादो। सेढीए असंखेज्जदिभागमेत्तमणुसअपज्जत्ताणं खेत्तस्स गहणं किण्ण कीरदे ? ण, तस्स अंगुलस्स संखेज्जदिभागे संखेज्जंगुलेसु वा अवट्ठाणादो। मारणंतियगदमिच्छाइट्ठी केवडि खेत्ते ? तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरिय-णरलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे। कुदो? पहाणीकदमणुसअपज्जत्तरासीदो। एवमुववादस्स वि। णवरि एगो आवलियाए असंखेज्जदिभागो दोण्णि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागा च मणुसअपज्जत्तरासिस्स भागहारा ट्ठवेदव्वा।

सासणसम्माइट्ठी असंजदसम्माइट्ठी सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादेहि परिणदा केवडि खेत्ते ? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। मारणंतिय-उववादगदा चदुण्हं

अब इस सूत्रका अर्थ कहते हैं– स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त हुए मनुष्य, पर्याप्त मनुष्य और मनुष्यिनी मिथ्यादृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सामान्य लोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और मनुष्यक्षेत्रके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, यहांपर मनुष्य पर्याप्त मिथ्यादृष्टियोंके क्षेत्रका ग्रहण किया है।

शंका– अपर्याप्त मनुष्य जगत्श्रेणीके असंख्यातवें भागप्रमाण हैं, अतएव यहां उनके क्षेत्रका ग्रहण क्यों नहीं किया है ?

समाधान– नहीं, क्योंकि, पर्याप्त मनुष्यका अवस्थान अंगुलके संख्यातवें भागमें अथवा संख्यात अंगुलोंमें पाया जाता है, इसलिये यहांपर अपर्याप्त मनुष्योंके क्षेत्रका ग्रहण नहीं किया है।

मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुए मनुष्य, पर्याप्त मनुष्य और मनुष्यिनी मिथ्यादृष्टि जीव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और तिर्यग्लोक तथा मनुष्यलोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, यहांपर मनुष्य अपर्याप्तराशिकी प्रधानता है। इसी प्रकार उपपादका भी कथन करना चाहिये। इतनी विशेषता है कि मनुष्य अपर्याप्तराशिके एकवार आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण और दो वार पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण भागहार स्थापित करना चाहिये।

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातसे परिणत हुए सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्य कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और मानुषक्षेत्रके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं। मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादको प्राप्त हुए

लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्डाइज्जादो असंखेज्जगुणे । सम्मामिच्छाइट्ठी सत्थाण-सत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादपरिणदा केवडि खेत्ते? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। संजदासंजदा सत्थाण-सत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादपरिणदा केवडि खेत्ते? चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे। मारणंतियसमुग्घादगदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे अच्छंति । पमत्त-संजदप्पहुडि जाव अजोगिकेवलि त्ति मूलोघभंगो । एवं मणुसपज्जत्तमणुसिणीसु । णवरि मिच्छाइट्ठीणं सासणसम्माइट्ठिभंगो । मणुसिणीसु असंजदसम्माइट्ठीणं उववादो णत्थि । पमत्ते तेजाहारसमुग्घादा णत्थि ।

सजोगिकेवली केवडि खेत्ते, ओघं[1] ॥ १२ ॥

एदस्स सुत्तस्स अत्थो मूलोघमवधारिय लोगस्स असंखेज्जदिभागे, असंखेज्जेसु वा भागेसु, सव्वलोगे वा त्ति वत्तव्वो ।

सासादनसम्यग्दृष्टि और असंयतसम्यग्दृष्टि सामान्य मनुष्य सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्धात, कषायसमुद्धात और वैक्रियिकसमुद्धातरूपसे परिणत हुए सम्यग्मिथ्यादृष्टि उक्त मनुष्य कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और मनुष्यक्षेत्रके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं । स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्धात, कषायसमुद्धात और वैक्रियिकसमुद्धात इन पदोंसे परिणत हुए संयतासंयत उक्त मनुष्य कितने क्षेत्रमें रहते हैं? सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और मनुष्यक्षेत्रके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं । मारणान्तिक-समुद्धातको प्राप्त हुए संयतासंयत सामान्य मनुष्य सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और मनुष्यक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। प्रमत्तसंयत गुणस्थानसे लेकर अयोगिकेवली गुणस्थान तक सामान्य मनुष्योंके यथासंभव स्वस्थानस्वस्थान आदि पदोंका क्षेत्र मूलोघप्ररूपणाके समान जानना चाहिये । इसी प्रकार मनुष्य पर्याप्त और मनुष्यिनियोंमें समझना चाहिये । इतनी विशेषता है कि इनमें मिथ्यादृष्टियोंका कथन सासादनसम्यग्दृष्टियोंके समान है । मनुष्यिनियोंमें असंयतसम्यग्दृष्टियोंका उपपाद नहीं पाया जाता है । इसी प्रकार उन्हींके प्रमत्तसंयत गुणस्थानमें तैजससमुद्धात और आहारकसमुद्धात नहीं पाया जाता है ।

सयोगिकेवली भगवान् कितने क्षेत्रमें रहते हैं? ओघप्ररूपणामें सयोगि-जिनोंका जो क्षेत्र कह आये हैं, तत्प्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १२ ॥

इस सूत्रका अर्थ, मूलोघ सूत्रका निश्चय करके सयोगिकेवली जीव लोकके असंख्यातवें भाग क्षेत्रमें, लोकके असंख्यात बहुभागप्रमाण क्षेत्रमें अथवा सर्व लोकमें रहते हैं, इस प्रकार कहना चाहिये ।

---

१ सयोगिकेवलिनां सामान्योक्तं क्षेत्रम् । स. सि. १, ८.

मणुसअपज्जत्ता केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे ॥ १३ ॥

सत्थाण-वेदण-कसायसमुग्घादेहि परिणदा चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तस्स संखेज्जदिभागे णिचिदकमेण । विण्णासकमेण पुण असंखेज्जाणि माणुसखेत्ताणि । मारणंतियसमुग्घादो माणुसोघतुल्लो । मारणंतियखेत्तं ठविज्जमाणे सूचिअंगुलपढम-तदियवग्गमूले गुणेदूण सेढिम्हि भागे हिदे दव्वं होदि । तम्हि आवलियाए असंखेज्जदिभागमेत्त-उवक्कमणकालेण भागे हिदे एगसमयम्हि मरंतरासी होदि । तं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ओवट्टिय रूवूणेण गुणिदे एगसमयसंचिद-मारणंतियरासी होदि । पुणो तमावलियाए असंखेज्जदिभाएण मारणंतियउवक्कमण-कालेण गुणिदे मारणंतियकालब्भंतरे संचिदरासी होदि । पुणो अवरेण पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण भागे हिदे रज्जुआयामेण मुक्कमारणंतियरासी होदि । रज्जुआयदस्स विक्खंभो पदरंगुले पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागेण ओवट्टिदे होदि । एवमुववादस्स वि । णवरि एगसमयसंचिदो त्ति आवलियाए असंखेज्जदिभाएण

लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य कितने क्षेत्रमें रहते हैं? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ॥ १३ ॥

स्वस्थानस्वस्थान, वेदनासमुद्घात और कषायसमुद्घातसे परिणत हुए लब्ध्यपर्याप्त मनुष्य निचितक्रमसे सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और मनुष्यक्षेत्रके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं । विन्यासक्रमसे तो असंख्यात मनुष्यक्षेत्र लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंका क्षेत्र है । मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुए लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंका क्षेत्र ओघमनुष्यप्ररूपणाके समान है । मारणान्तिकक्षेत्रके स्थापित करनेपर सूच्यंगुलके प्रथम और तृतीय वर्गमूलको परस्पर गुणित करके जो राशि आवे उसका जगत्श्रेणीमें भाग देनेपर लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंका द्रव्यप्रमाण होता है । इसमें आवलीके असंख्यातवें भागमात्र उपक्रमणकालका भाग देनेपर एक समयमें मरनेवाले लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंकी राशिका प्रमाण होता है । इसे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे भाजित करके और एक कम पल्योपमके असंख्यातवें भागसे गुणित करनेपर एक समयमें संचित हुई मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त लब्ध्यपर्याप्त मनुष्यराशि होती है । पुनः इस राशिको आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण मारणान्तिक उपक्रमणकालसे गुणित करनेपर मारणान्तिककालके भीतर संचित जीवराशिका प्रमाण होता है । पुनः इसे एक दूसरे पल्योपमके असंख्यातवें भागसे भाजित करनेपर राजुप्रमाण आयामरूपसे किया है मारणान्तिकसमुद्घात जिन्होंने, ऐसे लब्ध्यपर्याप्त मनुष्योंकी राशि होती है । प्रतरांगुलको पल्योपमके असंख्यातवें भागसे भाजित करनेपर राजुप्रमाण आयतक्षेत्रका विस्तार होता है । इसी प्रकार उपपादका भी क्षेत्र समझना चाहिये । इतनी विशेषता है कि उपपादराशि एक समयमें संचित होती है, इसलिये ऊपर जो आवलीके असंख्यातवें भागप्रमाण गुणकार कह आये हैं वह निकाल देना चाहिये । अब दूसरे ढंगमें जगत्श्रेणीके

गुणगारो अवणेदव्वो । विदियदंडे सेढीए संखेज्जदिभागायामेण मुक्कमारणंतियजीवे इच्छामो त्ति अण्णेगो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो ।

देवगदीए देवेसु मिच्छादिट्ठिप्पहुडि जाव असंजदसम्मादिट्ठि त्ति केवडि खेत्ते, लोगस्स असंखेज्जदिभागे[1] ॥ १४ ॥

सत्थाणसत्थाण - विहारवदिसत्थाण - वेदण-कसाय - वेउव्वियसमुग्घादगददेव-मिच्छादिट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, तिरियलोयस्स संखेज्जदिभागे, माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे । कुदो ? पधाणीकदजोइसियरासित्तादो । मारणंतिय-उववादपरिणदमिच्छादिट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे णर-तिरियलोगेहिंतो असंखेज्जगुणे । एत्थ खेत्तपमाणं जाणिय ठ्वेदव्वं । सेसगुणट्ठाणाणमोघभंगो ।

एवं भवणवासियप्पहुडि जाव उवरिम-उवरिमगेवज्जविमाण-वासियदेवा त्ति ॥ १५ ॥

एदेण देसामासियसुत्तेण सूचिद-अत्थो वुच्चदे । तं जहा— सत्थाणसत्थाण-विहारवदिसत्थाण - वेदण-कसाय - वेउव्विय - उववादपरिणदभवणवासियमिच्छादिट्ठी

संख्यातवें भाग आयामरूपसे किया है मारणान्तिकसमुद्घात जिन्होंने, ऐसे जीवोंको लाना इष्ट है, इसलिये एक दूसरा पल्योपमका असंख्यातवां भाग भागहार स्थापित करना चाहिये ।

देवगतिमें देवोंमें मिथ्यादृष्टि गुणस्थानसे लेकर असंयतसम्यग्दृष्टि गुणस्थान तक प्रत्येक गुणस्थानके देव कितने क्षेत्रमें रहते हैं ? लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं ।। १४ ।।

स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिक-समुद्घातको प्राप्त हुए देव मिथ्यादृष्टि जीव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें, तिर्यग्लोकके संख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं, क्योंकि, यहांपर ज्योतिष्क देवराशि प्रधान है । मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादरूपसे परिणत हुए मिथ्यादृष्टि देव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और मनुष्यलोक तथा तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं । यहांपर क्षेत्रके प्रमाणको जानकर स्थापित करना चाहिये । देवोंके शेष गुणस्थानोंकी प्ररूपणा ओघप्ररूपणाके समान है ।

भवनवासी देवोंसे लेकर उपरिम-उपरिम ग्रैवेयकके विमानवासी देवों तकका क्षेत्र इसी प्रकार होता है ।। १५ ।।

अब इस देशामर्शक सूत्रसे सूचित हुए अर्थको कहते हैं । वह इस प्रकार है— स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, वैक्रियिकसमुद्घात और

---

१ देवगतौ देवानां सर्वेषां चतुर्षु गुणस्थानेषु लोकस्यासंख्येयभागः । स. सि. १, ८.

चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे, अड्ढाइज्जादो असंखेज्जगुणे । तिरिक्ख-मणुसमिच्छाइट्ठिणो कण्णागारेण ट्ठिदभवणवासियखेत्तेसु उप्पज्जमाणा वे विग्गहे कादूण सेढीए संखेज्जदिभागायामेण उप्पज्जंता संभवंति, तदो तिरियलोगादो असंखेज्जगुणेण उववादखेत्तेण होदव्वमिदि? सच्चमेदं जइ सेढीए संखेज्जदिभागमेत्तायामो उववादखेत्तस्स लब्भइ । किंतु संखेज्जसूचिअंगुलमेत्तो चेव । एत्तो संखेज्जजोयणाणि हेट्ठा गंतूण भवणवासियविमाणाणमवट्ठाणाणुवलंभादो । ण च तिरियलोगे सव्वत्थ तदावासा, तिरियलोगस्स मज्झिमासंखेज्जदिभागे चेव तेसिमत्थित्तदंसणादो । ण च उवरिमदेवेसुप्पज्जमाणतिरिक्खाणं व भवणवासिएसुप्पज्जमाणतिरिक्ख-मणुस्साणं सगुप्पत्तिदिसं मुच्चा तिरिच्छेण गमणमत्थि, कंडुज्जुवाए गईए भवणवासियजगपणिधिमागंतूण हेट्ठावलिए भवणवासिएसुप्पत्तिदंसणादो । एदं कुदो णव्वदे? भवणवासियाणमुववादखेत्तस्स तिरियलोगासंखेज्जदिभागत्तण्णहाणुववत्तीदो । सगच्छिदट्ठाणादो हेट्ठा ओयरिय भवणवासिएसुप्पज्जमाणाणमुववादखेत्तायामो सेढीए संखेज्जदिभागो

उपपादरूपसे परिणत हुए भवनवासी मिथ्यादृष्टि देव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं ।

शंका– कर्णरेखाके आकारसे स्थित भवनवासियोंके क्षेत्रोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंच और मनुष्य मिथ्यादृष्टि जीव दो विग्रह करके जगत्श्रेणीके संख्यातवें भागप्रमाण आयामरूपसे उत्पन्न होते हुए पाये जाना संभव है, इसलिये भवनवासियोंका उपपादक्षेत्र तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा होना चाहिये ?

समाधान– यदि उपपादक्षेत्रका आयाम जगत्श्रेणीके संख्यातवें भागप्रमाण पाया जाता, तो यह उक्त कथन सत्य होता । किन्तु, उपपादक्षेत्रका आयाम संख्यात सूच्यंगुलमात्र ही है, क्योंकि, इससे संख्यात योजन नीचे जाकर भवनवासियोंके विमानोंका अवस्थान नहीं पाया जाता है, तथा तिर्यग्लोकमें भी सर्वत्र भवनवासियोंके आवास नहीं है, क्योंकि, तिर्यग्लोकके मध्यवर्ती असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें ही भवनवासी देवोंका अस्तित्व देखा जाता है । दूसरे, उपरिम देवोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंचोंके समान भवनवासियोंमें उत्पन्न होनेवाले तिर्यंच और मनुष्योंका अपनी उत्पत्तिकी दिशाको छोड़कर तिरछा गमन होता हो, ऐसा भी नहीं है, क्योंकि, मनुष्य और तिर्यंचोंकी बाणके समान सीधी गतिसे भवनवासी लोकके समीप आकर अधस्तनश्रेणीमें स्थित भवनवासी देवोंमें उत्पत्ति देखी जाती है ।

शंका– यह कैसे जाना जाता है ?

समाधान– भवनवासियोंका उपपादक्षेत्र तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण अन्यथा बन नहीं सकता है, इससे उक्त कथन जाना जाता है ।

अपने रहनेके स्थानसे नीचे जाकर भवनवासी देवोंमें उत्पन्न होनेवाले मनुष्य तिर्यंचोंके उपपादक्षेत्रका आयाम जगत्श्रेणीके संख्यातवें भागप्रमाण पाया जाता है, मात्र इसीलिये उसका ग्रहण करना युक्त नहीं है, क्योंकि, उक्त प्रकारसे उनमें उत्पन्न होनेवाले जीव बहुत थोडे होते हैं ।

लब्भदि त्ति तग्गहणं जुत्तं, तहा तत्थुप्पज्जमाणाणं सुट्ठु त्थोवत्तादो। एवं कुदो णव्वदे? तिरियलोगस्सासंखेज्जदिभागे त्ति वक्खाणादो। मारणंतियसमुग्घादगदमिच्छाइट्ठी तिण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे तिरियलोगादो असंखेज्जगुणे, अड्डाइज्जादो वि असंखेज्जगुणे। सेसमोघं। णवरि असंजदसम्माइट्ठीणं उववादो णत्थि। वाणवेंतर-जोइसियाणं देवोघभंगो। णवरि असंजदसम्माइट्ठीणं उववादो णत्थि।

पणुवीसं असुराणं सेसकुमाराण दस धणू चेय।
वेंतर-जोदिसियाणं दस सत्त धणू मुणेयव्वा[1] ॥ १८ ॥

एदम्हादो उस्सेहादो एत्थ ओगाहणखेत्तमाणेदव्वं। सोधम्मीसाणे सत्थाण-सत्थाण-विहारवदिसत्थाण-वेदण-कसाय-वेउव्वियसमुग्घादगदमिच्छादिट्ठी चदुण्हं लोगाणमसंखेज्जदिभागे माणुसखेत्तादो असंखेज्जगुणे। एत्थ सगलखेत्तपरिक्खा भवणवासियभंगो। अप्पणो ओहिखेत्तमेत्तं देवा विउव्वंति त्ति जं आइरियवयणं[2]

शंका– यह किस प्रमाणसे जाना जाता है?

समाधान– उपपादपरिणत भवनवासी देव तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें रहते हैं, इस प्रकार व्याख्यानसे उक्त कथन जाना जाता है।

मारणान्तिकसमुद्घातको प्राप्त हुए मिथ्यादृष्टि भवनवासी देव सामान्यलोक आदि तीन लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें, तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें और अढ़ाईद्वीपसे भी असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। शेष कथन ओघप्ररूपणाके समान है। इतनी विशेषता है कि असंयतसम्यग्दृष्टियोंका भवनवासियोंमें उपपाद नहीं होता है। वानव्यन्तर और ज्योतिषी देवोंका क्षेत्र देवसामान्यके क्षेत्रके समान है। इतनी विशेषता है कि असंयत-सम्यग्दृष्टियोंका वानव्यन्तर और ज्योतिषियोंमें उपपाद नहीं होता है।

भवनवासियोंके दश भेदोंमेंसे प्रथम भेद असुरकुमारोंके शरीरकी उंचाई पच्चीस धनुष और शेष नौ कुमारोंके शरीरकी ऊंचाई दश धनुष है। तथा व्यन्तर देवोंके शरीरकी ऊंचाई दश धनुष और ज्योतिषी देवोंके शरीरकी ऊंचाई सात धनुष जानना चाहिये ॥ १८ ॥

इस पूर्वोक्त उत्सेधसे यहां अवगाहनाक्षेत्र ले आना चाहिये। सौधर्म और ईशान कल्पमें स्वस्थानस्वस्थान, विहारवत्स्वस्थान, वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात और वैक्रियिकसमुद्घातको प्राप्त हुए मिथ्यादृष्टि देव सामान्यलोक आदि चार लोकोंके असंख्यातवें भागप्रमाण क्षेत्रमें और मानुषक्षेत्रसे असंख्यातगुणे क्षेत्रमें रहते हैं। यहांपर सर्व पदगत क्षेत्रोंकी परीक्षा भवनवासियोंके क्षेत्रके समान करना चाहिये। देव अपने अपने अवधिज्ञानके क्षेत्रप्रमाण विक्रिया करते हैं, इस प्रकार जो अन्य आचार्योंका वचन है वह घटित नहीं होता है, क्योंकि, ऐसा माननेपर लोकके

---

१ त्रि. सा. २४९. तत्र चतुर्थचरणे 'दस सत्त सरीरउदओ दु' इति पाठः।

२ सेसा वेंतरदेवा णिय-णिय-ओहीण जेत्तियं खेत्तं। पूरंति तेत्तियं पि हु पत्तेक्कं विकरणबलेण। ति. प. ५,९६.

तण्ण घडदे, लोगस्स संखेज्जदिभागमेत्तवेउव्वियखेत्तप्पसंगादो। मारणंतिय-उववादाणं देवोघभंगो । उववादखेत्तं ठविज्जमाणे विक्खंभसूचीगुणिदसेढिं ठविय पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभाएण सोहम्मीसाणउवक्कमणकालेण ओवट्टिदे उप्पज्जमाणजीवा होंति । असंखेज्जजोयणविदियदंडेण उप्पज्जमाणजीवे इच्छिय अवरो पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो भागहारो ठवेदव्वो। एक्कपदरंगुलविक्खंभेण सेढीए संखेज्जदिभागा-यामेण खेत्तं पुसंति त्ति पदरंगुलगुणिदसेढीए संखेज्जदिभागो गुणगारो ठवेदव्वो। सव्वत्थ उजुगदीए उप्पज्जमाणजीवेहिंतो विग्गहगदीए उप्पज्जमाणजीवा असंखेज्जगुणा । कुदो ? सेढीदो उस्सेढीए गहुत्तुवलंभादो । भवणवासियउववादखेत्तं व तिरियलोगस्स असंखेज्जदिभागो किं ण होदि त्ति वुत्ते ण होदि, पभापत्थडे उप्पज्जमाणाणं तिरिक्खाणं सव्वेसिं पि सेढीए संखेज्जदिभागायामो विदियदंडस्स लब्भदे, तेणेदमुववादखेत्तं तिरियलोगादो असंखेज्जगुणं त्ति। सेसगुणट्ठाणाणं देवभंगो ।

संख्यातवें भागप्रमाण वैक्रियिकसमुद्घातगत क्षेत्रके माननेका प्रसंग आ जाता है । सौधर्म और ईशानकल्पमें देवमिथ्यादृष्टियोंके मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादसंबन्धी क्षेत्र देवसामान्यके मारणान्तिकसमुद्घात और उपपादगतके समान जानना चाहिये । उपपादक्षेत्रके स्थापित करते समय सौधर्म-ऐशान देवमिथ्यादृष्टियोंकी विष्कंभसूचीसे गुणित जगत्श्रेणीको स्थापित करके पल्योपमके असंख्यातवें भागरूप सौधर्म और ऐशानसंबन्धी उपक्रमणकालसे अपवर्तित करनेपर उत्पन्न होनेवाले जीवोंका प्रमाण होता है । पुनः असंख्यात योजनरूप दूसरे दंडसे उत्पन्न होनेवाले जीवोंको लाना इष्ट है, ऐसा समझकर पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण एक दूसरा भागहार स्थापित करना चाहिये । तथा एक प्रतरांगुलप्रमाण विष्कंभसे और जगत्श्रेणीके संख्यातवें भागप्रमाण आयामसे क्षेत्रके स्पर्श करते हैं, इसलिये प्रतरांगुलगुणित जगत्श्रेणीका संख्यातवां भागप्रमाण गुणकार स्थापित करना चाहिये । सर्वत्र ऋजुगतिसे उत्पन्न होनेवाले जीवोंकी अपेक्षा विग्रहगतिसे उत्पन्न होनेवाले जीव असंख्यातगुणे होते हैं, क्योंकि, श्रेणीकी अपेक्षा उच्छ्रेणियां बहुत पाई जाती हैं ।

शंका— सौधर्म और ईशान कल्पके देवोंका उपपादक्षेत्र भवनवासी देवोंका उपपाद-क्षेत्रके समान तिर्यग्लोकके असंख्यातवें भागप्रमाण क्यों नहीं होता है ?

समाधान— नहीं, क्योंकि, सौधर्म ईशान कल्पके इकतीसवें प्रभापटलमें उत्पन्न होनेवाले सभी तिर्यंचोंके दूसरे दंडका आयाम जगत्श्रेणीके संख्यातवें भागप्रमाण पाया जाता है । इसलिये सौधर्म और ईशान कल्पके देवोंका उपपादक्षेत्र तिर्यग्लोकसे असंख्यातगुणा होता है, यह सिद्ध हुआ । सौधर्म और ईशानकल्पके देवोंके शेष गुणस्थानोंके स्वस्थानस्वस्थान क्षेत्रका कथन देवसामान्यके स्वस्थानस्वस्थान क्षेत्रके समान जानना चाहिये । सनत्कुमारकल्पसे लेकर उपरिम-उपरिमग्रैवेयक तक मिथ्यादृष्टि देवोंका स्वस्थानस्वस्थान आदि क्षेत्र ओघ सासादनसम्यग्दृष्टिके स्वस्थानस्वस्थान आदि क्षेत्रके समान है । तथा उन्हींके सासादनसम्यग्दृष्टि,